तंत्रयोग का वास्तविक स्वरूप

डॉ0 गरिमा

योग विभाग

साहू राम स्वरूप महिला महाद्यिालय बरेली उ0,प्रदेश

सार

हमारे समाज में तंत्र को लेकर अनेक गलत धारणांए लोंगों ने मन में बना ली है,जिससे तंत्र का वास्तविक स्वरूप विकृत होता चला गया।हमारे महापुरूषों ने तो योग और ज्ञानमार्ग की साधनाओं को भी साधारण व्यक्ति के लिए दुर्गम समझकर तंत्र की तुलना में अधिक सरल रास्ता दिखाया,परन्तु इस रास्ते का दुरूपयोग हुआ और इस विद्या का दुरूपयोग करके इसे बदनाम कर दिया गया।

यदि वास्तविकता पर नजर डालें तो तंत्र एक ऐसा मार्ग है जो हमें सीमित दायरे से निकाल कर हमारा हर तरह से विकास करता है,हमारे अन्दर छुपी अथाह शक्तियों से परिचित कराकर उसे कैसे जाग्रत किया जाये ,लोगों के कष्टों का निवारण जनकल्याण आदि यह सब सिखाता है। और यही तंत्र का वास्तविक स्वरूप कहलाता है।

मुख्य शब्द तंत्र, स्वरूप, वास्तविकता, जादू टोना, विकृति, शक्ति, आध्यात्मिक आदि

वर्तमान समय में जो तंत्र का स्वरूप समाज में प्रचलित है बह तंत्र का विकृत स्वरूप है क्योंकि तंत्र की वास्तविकता से सामान्यजन परिचित ही नही है क्योंकि तंत्र भारत की एक गूढ और प्राचीन विद्या है। विद्वानों का मानना है कि यह शारीरिक अनुशासन का पालन करते हुए आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति कर सकने का एक उत्तम साधन माना गया था,परन्तु कुछ ही समय बाद लोगों एवं साधकों ने तंत्र द्वारा प्राप्त शक्तियों का दुरूपयोग करना आरम्भ कर दिया था।जिससे तंत्र का वास्तविक स्वरूप विकृत होता चला गया ,लोग स्वार्थ हेतु इस विद्या का मनमाना प्रयोग करने लगे थे। आचार्य श्री भी अपनी पुस्तक में इस सन्दर्भ में लिखते हैकि *''जिस प्रकार प्रत्येक संस्था अथवा विचार प्रवाह में क्रमशः अनाधिकारी और स्वार्थी व्यक्तियों का प्रवेश हो जाता है,और वे मूल भावना का तोड–मरोड कर उसे अपनी रूचि अथवा दुरूभि संधियों की पूर्ति का साधन बना लेने की चेष्टा करते हैं,वही बात तंत्र के सम्बन्ध में हुई है।''1*

महापुरूषों ने फिर भी एक प्रयास जनमानस के उद्वार हेतु किया उन्होने योग और ज्ञान मार्ग की साधनाओं को साधारण व्यक्ति के लिए दुर्गम समझकर तंत्र के अपेक्षाकृत सरल मार्ग का प्रतिपादन किया जिससे कि वे सब भी आध्यात्म क्षेत्र में भी कुछ प्रगति कर सकें और उच्च स्तरों तक पहुँचने का अवसर पा सकें परन्तु कुछ गलत मानसिकता के व्यक्तियों ने उसमें मनमानी कल्पनाएं और अनोखे विधि विधान जोडकर उसे जादू टोना का स्वरू देने का प्रयास किया।इससे भी इसका वास्तविक स्वरूप अस्पष्ट होता चला गया। प्राचीनकाल में योग और तंत्र की शक्तियों द्वारा संसार के व्यक्तियों आंदि की बहुत सेवा की गयी थी।अनेक साधक ऐसे भी हुए जिन्होने दुःखियों के दुःख निवारण में ही अपना जीवन लगा दिया।इसके अतिरिक्त अनेक साधकों ने तंत्र शक्तियों के द्वारा ही दुःखियों के दुःख दूर किये,बीमार रोगियों को रोग मुक्त किया,अंधों को आंखों की रोशनी दी,कोढियों के शरीर शुद्व किये आदि ऐसे अनेक उदाहरण है जो तंत्र की वास्तविकता को स्पष्ट ही नही करते वरन इस विद्या द्वारा सामान्यजन के लिए कल्याण के मार्ग प्रशस्त करते है।

भारतवर्ष में आचार्यशंकर,धन्वंतरि,गोरखनाथ,मत्स्येन्द्रनाथ ,रामकृष्णपरमहंस, नागार्जुन,चरक आदि के बारे में ऐसी कथायें मिलती है,जिन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता हैकि जीवन भर वे लोगों के दुःख दूर करने में लगे रहे ।दुर्भाग्य से उस समय के महात्माओं मे भी दो विचारधाराएं हो गयीं।एक विचारधारा के लोग ईश्वर

प्राप्ति के कार्य को ही अपना लक्ष्य मानते थे तथा दूसरी विचारधारा के लोग सामान्यजन के दुःख निवारण के भी समर्थक थे,यह मतभेद बहुत बडा था परन्तु फिर भी जो जनकल्याण के समर्थक थे उनको शक्ति पूजक तांत्रिक आदि बताकर उनको अपनी श्रेणी से अलग कर दिया।समय परिवर्तन के साथ इस महान विद्या का भी दुर्दिन सामने आया और यह विद्या भी लगभग कुपात्रों के हाथ चली गयी और उन्होने उसका रावण की तरह दुरूपयोग करना आरंभ कर दिया। मारण, मोहन,वशीकरण आदि का प्रयोग अपनी इन्द्रियों के सुख या धन लालसा के लिए किया जाने लगा और अन्त में परिणाम यह हुआ कि तत्रं विद्या का वैज्ञानिक और उच्चकोटि का स्वरूप विकृत होता चला गया।

तंत्र के उस स्वरूप के विषय में बतलाते हुए महर्षि अरविन्द कहते हैं कि *'' भारत भूमि के आत्मा के क्रमशः विस्तारशील राज्य में यह एक महत्वपूर्ण विकास शिखर था।वैदिक ऋषियों ने एक आंतरिक अनुशासन और धर्म विकसित किया और इसे पूर्ण बनाया जो मूल रूप में सहज बोध पर आश्रित और प्रतीकात्मक था और उस युग की अकृत्रिम विशुद्व मानवता के अनुरूप था।''2* तंत्र को कतिपय विद्वानो ने स्वतंत्र विज्ञान भी कहा है क्यांकि तंत्र साधना के द्वारा ही प्रकृति की सभी शक्तियों पर नियंत्रण करके उन शक्तियों को अपनी इच्छानुसार वश में करना यह इसका मुख्य कार्य है।तंत्र में जो साधना की जाती है उसके द्वारा अपने अन्दर की विद्युत शक्ति को इतना विकसित कर लिया जाता है कि प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं को अपनी इच्छानुसार ढाल सकते है,इसीको सिद्वि कहते है।तंत्र विज्ञान के अनुसार *''सूक्ष्म जगत में चेतना ग्रंथियां विचरण करती है जिस उद्वेश्य से साधना की जा रही है, उसके अनुसार इन्हीं प्रकार की चेतना ग्रंथियों को जाग्रत किया जाता है,ताकि वह क्रियाशील होकर अनुकूल परिणाम प्रस्तुत करने मे समर्थ हो।''3* इसका तात्पर्य यह है कि जैसे कोई व्यक्ति अपने मालिक की आज्ञाओं का पालन करता है,वैसे ही ये चेतना ग्रंथियाँ साधक के साथ अप्रत्यक्ष रूप में हमेशा रहती है और अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार साधक की आज्ञाओं को पूर्ण करती है।

पं0 श्री राम शर्मा आचार्य अपनी पुस्तक गायत्री महाविज्ञान में लिखते है कि'' *अदृश्य लोक''चेतना ग्रंथियां'' सदा विचरण करती है।तांत्रिक साधना विधानों द्वारा अपने योग्य ग्रंथियों को पकडकर उनमें प्राण डाला जाता है। जब वे प्राणवान बन जाती है,तब उनका आक्रमण सीधा साधक पर होता है। यदि साधक अपनी आत्मिक बलिष्ठता द्वारा उस आक्रमण को सह गया ,उससे परास्त न हुआ तो प्रतिहत होकर वह ग्रंथि उसके वशवर्ती हो जाती है और चौबीस घंटे आज्ञाकारी सेवक की तरह काम करती है।''4*

यही नही इसके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए पंडित गोपीनाथ कविराज अपनी पुस्तक में लिखते हैंकि *''तंत्र का मूल स्वरूप 'परावाक' रूप है यही भगवान की पराशक्ति है, अवतरण क्रम से निखिलविद्या का स्फुरण होता है।इस अवस्था में कालगत अतीत अनागत और वर्तमान का भेद नही रहता।''5*

सामान्यतः हम सभी लोग जादू टोना ,काम वासना आदि को ही तंत्र समझते थे और वही इसका स्वरूप बनता चला गया। इस विषय में रमेश चन्द्र अवस्थी अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते है कि *'' तंत्र की चालू परिभाषा जादू टोना,कामवासना का उदात्तीकरण या भूमिगत आध्यात्मिक साधना है जो वास्तविकता से परे है,अर्थात तंत्र का विकृत सवरूप है।''6*

यही एक कारण हैकि हमारे समाज में तंत्र को लेकर अनेक गलत धारणांए लोंगों ने मन में बना ली है,जिससे तंत्र का वास्तविक स्वरूप विकृत होता चला गया।हमारे महापुरूषों ने तो योग और ज्ञानमार्ग की साधनाओं को भी साधारण व्यक्ति के लिए दुर्गम समझकर तंत्र की तुलना में अधिक सरल रास्ता दिखाया,परन्तु इस रास्ते का दुरूपयोग हुआ और इस विद्या का दुरूपयोग करके इसे बदनाम कर दिया गया।

तंत्र का उद्वेश्य किसी भी प्रकार का अंधविश्वास फैलाना नही है जैसा की सामान्यजन ने अपनी सोच बना रखी है पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य इस विषय में कहते है कि *''तंत्र का वास्तविक स्वरूप अंधविश्वास या करोंडों लोगों की मान्यता पर आधारित नही है, वरन वह अध्यात्म विज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसका अबलम्वन करके सर्वथा सामान्य व्यक्ति भी ससंससरिक रूप से ऊपर उठकर क्रमशः उच्च जीवन में प्रविष्ट हो सकता है।''7*

वास्तव में यह तो एक ऐसी विद्या है जो ज्ञान के उच्च शिखर तक पहुंचने एवं मानव जीवन की अनेक कठिनाइयों को सरलता से दूर करने का मार्ग प्रशस्त करती है क्योंकि इसका अर्थ ही है ज्ञान का विस्तार करना ।स्वामी निरंजनानन्द जी भी इसके अर्थ का वर्णन करते हुए लिखते हैकि'' परम्परा के अनुसार इसका

तात्पर्य ज्ञान के विद्या के विस्तार से है'' तंत्र का मूल अर्थ बताते हुए डा ब्रज बिहारी बपनी पुस्तक में बताते हैं कि''*जिस वस्तु,विचार या शक्ति का विस्तार किया है। उसकी रक्षा करना।*''8 इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करते हुए और इसे चेतना का विस्तार बताते हुए परमहंस सत्यानन्द सरस्वती जी लिखते है कि'' *तंत्र शब्द का सम्बन्ध जीवन में चेतना और शक्ति से है।'तन' धातु या 'तनोति' शब्द,जिसका मतलब होता हैविस्तार करना।इसका वास्तविक तात्पर्य है,हमारी चेतना का विस्तार।जब तकजीवन में चेतना का विस्तार नहीं होता ,तब तक व्यक्ति किसी भी प्रकार की विद्या को या शिक्षा को अपना नहीं सकता है।''9*

अतः निष्कर्षता हम लही कह सकते है कि तंत्र मात्र जादू टोना ,दूसरों का बहित करने वाली क्रियामात्र नहीं है वरन तंत्र का वास्तविक स्वरूप वह है जो साधक को ऊर्ध्वगामी बनाता है जनहित और समाज कल्याण इनका मुख्य लक्ष्य होता है,तंत्र हमें सीमित से असीमित को देखने का अनुभव करने तथा उसका ज्ञान प्राप्त करने वाला विज्ञान है।

सन्दर्भ सूची

1. तंत्र महाविज्ञान भाग एक, पं० श्री राम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान वेदनगर, बरेली 1994 पृ.4
2. उदधृत अखण्ड ज्योति मासिक पत्रिका, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा ,जनवरी 1995,पृ.22
3. सावित्री कुण्डलिनी एवं तंत्र पं० श्री राम शर्मा आचार्य अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा, 1998 पृ०.817
4. गायत्री महाविज्ञान–पं० श्री राम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना प्रेस गायत्री तपोभुमि मथुरा, 2008 पृ० 116
5. तांत्रिक साधना और सिद्धान्त, गोपीनाथ कविराज, बिहार राष्ट्रभाषा पटिपद पटना,पृ.8
6. योग तन्त्र और साधना, पं० रमेश चन्द्र अवस्थी विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वाराणसी पृ०.8
7. तंत्र महाविज्ञान भाग एक, पं० श्री राम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान वेदनगर, बरेली 1994 पृ.4
8. आगम और तंत्र,डॉ0 ब्रज बिहारी निगम,रंजन पब्लिकेशन,नई दिल्ली पृ.25
9. तंत्र दर्शन परमहंस निरंजनानन्द सरस्वती बिहार योग विद्यालय, मुंगेर बिहार पृ.1